नेक बनने का नुस्ख़ा

इस्लामी बहनों के लिये

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

ने इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल शरीअ़तो त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़

63 म-दनी इन्आ़मात

63 Madani In-aamaaT (Hindi)

ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाए हैं । इन के मुत़ाबिक़ आसानी से अ़मल करने का त़रीक़ए कार आख़िर में दिया गया है । मज़ीद मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से किताब **जन्नत के त़लब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता** त़लब फ़रमा सकते हैं।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

مکتبۃ المدینہ
दा'वते इस्लामी

म-दनी वज़ाह़तें

म-दनी इन्आ़मात की वज़ाह़तों और रिआ़यतों से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात के जवाबात के लिये तन्ज़ीमी त़ौर पर तीन क़ाइदे मुक़र्रर किये गए हैं।

क़ाइदा नम्बर 1 : बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात चन्द ''जुज़्इय्यात'' पर मुश्तमिल हैं।

म-सलन : तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त, अव्वाबीन वाला म-दनी इन्आ़म, इस **म-दनी इन्आ़म** में 4 जुज़् हैं, लिहाज़ा ऐसे म-दनी इन्आ़मात पर **अक्सर पर अ़मल होने की सूरत में तन्ज़ीमी त़ौर पर अ़मल मान लिया जाएगा।**

(अक्सर से मुराद आधे से ज़ियादा म-सलन **100** में से **51** अक्सर कहलाएगा)

क़ाइदा नम्बर 2 : बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर किसी दिन अ़मल न होने की सूरत में तन्ज़ीमी त़ौर पर दूसरे दिन अ़मल की तरग़ीब है।

म-सलन : चार सफ़्हात फ़ैज़ाने सुन्नत, **313** बार दुरूदे पाक पढ़ने या कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ से कम अज़ कम **3** आयात की तिलावत (मअ़ तरजमा व तफ़्सीर) करने से महरूमी रही। इस सूरत में जितने दिन नाग़ा हुवा, **बा'द वाले दिनों में रह जाने वाले दिनों का ह़िसाब लगा कर उतनी ही मर्तबा अ़मल करने पर तन्ज़ीमी त़ौर पर अ़मल मान लिया जाएगा।**

क़ाइदा नम्बर 3 : बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर अ़मल की आ़दत बनाने में वक़्त लगता है।

म-सलन : क़ह्क़हा, तू तुकार से बचने और निगाहें झुका कर चलने की आ़दत बनाने वाले इन्आ़मात, **ऐसे म-दनी इन्आ़मात पर ज़मानए कोशिश के दौरान अ़मल मान लिया जाएगा ।** (कोशिश पाए जाने के लिये ज़रूरी है कि कम अज़ कम दिन में 3 दफ़्आ़ अ़मल करे)

यौमिय्या 47 म-दनी इन्आ़मात

पहला द-रजा 17 म-दनी इन्आ़मात

(1) क्या आज आप ने कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले **अच्छी अच्छी निय्यतें** कीं ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरग़ीब दिलाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(2) क्या आज आप ने **पांचों नमाज़ें** अदा फ़रमाईं ? (अपने घर में नमाज़ के लिये कोई जगह मख़्सूस करना **मुस्तह़ब** है इसे **मस्जिदे बैत** कहते हैं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(3) क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार **आ-यतुल कुर्सी, सू-रतुल इख़्लास** और **तस्बीह़े फ़ातिमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **पढ़ी ?** नीज़ रात में **सू-रतुल मुल्क** पढ़ या सुन ली ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(4) क्या आज आप ने बातचीत, चलत फिरत, उठाना रखना, खाना पकाना, फ़ोन पर गुफ़्त-गू वग़ैरा तमाम कामकाज मौक़ूफ़ कर के **अज़ान का जवाब** दिया ? (अगर पहले से खा पी रही हों और अज़ान शुरूअ़ हो जाए तो खाना पीना जारी रख सकती हैं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(5) क्या आज आप ने अपने **श-जरे** के कुछ न कुछ **अवराद** और कम अज़ कम 313 बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ लिये ? नीज़ कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ से कम अज़ कम तीन आयात (मअ़ तरजमा व तफ़्सीर) तिलावत करने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(6) क्या आज आप ने आयन्दा की हर जाइज़ बात के इरादे पर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (या'नी अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो) और मिज़ाज पुर्सी पर शिक्वा करने के बजाए اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال (या'नी हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है) और किसी ने'मत को देख कर مَاشَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी) या بَارَکَ اللّٰہُ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ब-र-कत दे) कहा ? (जब भी येह चारों अ़-रबी अल्फ़ाज़ कहे जाएं उस वक़्त मा'ना पर नज़र रखिये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(7) आज आप ने (घर में भी और बाहर भी) हर छोटे बड़े ह़त्ता कि वालिदा (और एक दिन के बच्चे को भी) **तू** कह कर मुख़ातब किया या **आप** कह कर ? नीज़ हर एक से दौराने गुफ़्त-गू **"हैं !"** कह कर बात की या **"जी !"** कह कर (आप और जी कहना दुरुस्त जवाब है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(8) क्या आज आप ने **सलाम का जवाब** और छींकने वाले के اَلْحَمْدُلِلّٰه कहने पर फ़ौरन इतनी आवाज़ से जवाबन یَرْحَمُکَ اللّٰه कहा कि दोनों ने सुन लिया ? (ग़ैर महरम के सलाम और छींक का जवाब इतनी आवाज़ से दें कि सिर्फ़ आप ख़ुद ही सुन सकें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(9) क्या आज आप ने दौराने गुफ़्त-गू कुछ न कुछ **दा'वते इस्लामी की इस्तिलाहात** इस्ति'माल फ़रमाई ? नीज़ **तलफ़्फ़ुज़** की दुरुस्ती के लिये कोशिश की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(10) क्या आज आप ने ह़त्तल इम्कान सुन्नत के मुताबिक़ बैठ कर मअ़ पर्दे में पर्दा, खाने पीने के दौरान **मिट्टी के बरतन** इस्ति'माल फ़रमाए ? नीज़ **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाने (या'नी ख़्वाहिश और भूक से कम खाने) की कोशिश फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(11) क्या आज आप ने फ़ैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम **दो[2] दर्स** (मद्रसा, घर वग़ैरा) जहां सहूलत हो दिये या सुने ? (बारी के दिनों में आयाते क़ुरआनी और तरजमे को पढ़े बिग़ैर और आगे या पीछे से छूए बिग़ैर दर्स देना जाइज़ है) (दो में से घर का एक दर्स ज़रूरी है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(12) क्या आज आप ने **12** मिनट **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किसी **इस्लाह़ी किताब** और **फ़ैज़ाने सुन्नत** से तरतीब वार कम अज़् कम **चार सफ़ह़ात** (दर्स के इ़लावा) पढ़् या सुन लिये ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(13) क्या आज आप ने कम अज़् कम एक बार (बेहतर येह है कि सोने से क़ब्ल) **सलातुत्तौबा** पढ़् कर दिन भर के बल्कि साबिक़ा होने वाले तमाम गुनाहों से **तौबा** कर ली ? नीज़् ख़ुदा न ख़्वास्ता गुनाह हो जाने की सूरत में फ़ौरन **तौबा** कर के आयन्दा वोह गुनाह न करने का अ़ह्द किया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(14) क्या आज आप ने यक्सूई के साथ कम अज़् कम **12** मिनट **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपने आ'माल का मुह़ा-सबा) करते हुए जिन जिन "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल हुवा उन की रिसाले में ख़ाना पुरी फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(15) क्या आज आप ने ह़त्तल इम्कान (प्लास्टिक की नहीं) खजूरी **चटाई** या न होने की सूरत में ज़मीन पर **सोते वक़्त सिरहाने** (और सफ़र में भी) सुन्नत के मुत़ाबिक़ आईना, सुरमा, कंघा, सूई धागा, मिस्वाक, तेल की शीशी और क़ैंची साथ रखी ? नीज़ नींद से फ़राग़त के बा'द **बिस्तर** और उतारने के बा'द **लिबास** तह कर के रखा ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(16) आप ने कहीं अपने घर में مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ जानदारों की **तसावीर** या **स्टीकर्ज़** तो नहीं लगा रखे ? (जिस घर में जानदार की तस्वीर ता'ज़ीम की जगह रखी हो या कुत्ता हो उस घर में रह़मत के फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते अगर आप बा इख़्तियार हैं तो हर लिबास, दीवार, बोतल, बक्स बल्कि घर की हर चीज़ पर से तसावीर का ख़ातिमा कर के सवाब कमाइये। बच्चों को जानदारों की तसावीर वाले बाबासूट भी मत पहनाइये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(17) क्या आज आप ने कम अज़ कम दो इस्लामी बहनों को **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ व दीगर म-दनी कामों की तरग़ीब दिलाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

दूसरा द-रजा 18 म-दनी इन्आ़मात

(18) क्या आज आप ने फ़ज्र के साथ साथ ज़ोहर की सुन्नते क़ब्लिया फ़र्ज़ रक्अ़तों से क़ब्ल नीज़ अ़स्र और इ़शा की **क़ब्लिया सुन्नतें** और फ़र्ज़ों के बा'द वाले **नवाफ़िल** अदा फ़रमाए ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(19) क्या आज आप ने नमाज़े **तहज्जुद, इ़श्राक़ व चाश्त** और **अव्वाबीन** अदा फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(20) क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार **तह़िय्यतुल वुज़ू** अदा फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(21) क्या आज आप ने मर्कज़ी **मजलिसे शूरा, काबीनात, मुशा-व-रतें** व दीगर तमाम **मजालिस** जिस की भी आप मा तह़्त हैं उन की (शरीअ़त के दाएरे में रह कर) **इ़ताअ़त** फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(22) आज आप ने घर के अफ़्राद के इ़लावा कहीं (कपड़े, फ़ोन, ज़ेवरात वग़ैरा)चीज़ें दूसरों से **मांग कर** तो इस्ति'माल नहीं कीं ? (सिर्फ़ अपनी चीज़ें इस्ति'माल कीजिये और ज़रूरत की चीज़ निशानी लगा कर अपने पास ब हिफ़ाज़त रखिये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(23) आज आप ने (घर में या बाहर) किसी पर गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर **ग़ुस्से का इ़लाज** फ़रमाया या बोल पड़ीं ? नीज़ **दर गुज़र** से काम लिया या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ़ ढूंडती रहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(24) किसी ज़िम्मेदार (या आ़म इस्लामी बहन) से बुराई सादिर होने की सूरत में तह़रीरी तौ़र पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नरमी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बिला इजाज़ते शर-ई किसी और पर इज़्हार कर के आप ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(25) क्या आज आप ने किसी से ऐसे **फ़ुज़ूल सुवालात** तो नहीं किये जिन के ज़रीए़ मुसल्मान उ़मूमन **झूट** के गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं ? (म-सलन बिला ज़रूरत पूछना आप को हमारा खाना पसन्द आया ? आप को सफ़र में कोई तक्लीफ़ तो नहीं हुई ? वग़ैरा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(26) आज आप ने कहीं ना मह़रम रिश्तेदारों, ना मह़रम पड़ोसियों नीज़ देवर या जेठ से مَعَاذَاللّٰه बे तकल्लुफ़ हो कर और हंस हंस कर गुफ़्त-गू करने का मम्नूअ़ काम तो नहीं किया ? क्या इन के सामने आने से कतराई और इन से **शर-ई पर्दा** किया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(27) क्या आज आप (घर में या बाहर) **T.V, V.C.R** या **Internet** वग़ैरा पर **फ़िल्में, डिरामे और गाने बाजे** या गुनाहों भरी ख़बरें देखने या सुनने से बचीं ? नीज़ आंखों की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बनाने के लिये सोने के अवक़ात के इलावा कम अज़ कम **12 मिनट आंखें बन्द** रखीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(28) क्या आज आप ने **घर में म-दनी माहोल** बनाने के लिये **19 म-दनी फूलों** के मुताबिक़ मुम्किना सूरत में अ़मल किया ? नीज़ तमाम तन्ज़ीमी मस्रूफ़ियात से फ़ारिग़ हो कर **मग़रिब से पहले** घर पहुंच गईं ? (म-दनी फूल रिसाले के आख़िर में मुला-हज़ा फ़रमाइये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(29) आज आप ने कहीं (घर में और बाहर) किसी पर **तोहमत** तो नहीं लगाई ? किसी का नाम तो नहीं बिगाड़ा ? किसी से **गाली गलोच** तो नहीं की ? (किसी को चोर, जादूगर, लम्बी, ठिंगनी वग़ैरा न कहा करें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(30) आज आप ने दूसरे की बात इत्मीनान से सुनने के बजाए उस की **बात काट कर** कहीं अपनी बात तो शुरूअ़ नहीं कर दी ? नीज़ बात समझ जाने के बा वुजूद बे साख़्ता **हैं ? जी ? या क्या ?** वग़ैरा बोल कर या अब्रू या चेहरे के इशारे से दूसरों को ख़्वाह म ख़्वाह अपनी बात दोहराने की ज़हमत तो नहीं दी ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(31) आज आप ने घर के म-दनी मुन्नों को बहलाने के लिये **झूट** तो नहीं बोला ? (म-सलन खाना खा लोगे तो खिलोना दूंगी, सो जाओ देखो बिल्ली आ रही है वग़ैरा जब कि वाक़िअ़तन ऐसा न हो तो येह झूट है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(32) क्या आज आप दिन का अक्सर हि़स्सा **बा वुज़ू** रहीं ? नीज़ बैठने में अक्सर **क़िब्ला रू** रहने की सुन्नत अदा करने की सआ़दत पाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(33) क्या आज आप ने **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ात) में पढ़ने पढ़ाने की तरकीब की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(34) क्या आज आप ने राह चलते वक़्त और गाड़ी में सफ़र के दौरान **आंखों का कुफ़्ले मदीना** लगाते हुए अक्सर नीची निगाहें रखीं ? इधर उधर देखने और साइन बोर्ड वग़ैरा पर नज़र डालने से बचने की कोशिश की ? नीज़ किसी से बात करते वक़्त अक्सर **अपनी निगाह नीची रखी** या मुख़ातब के चेहरे पर नज़रें गाड़े रहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(35) क्या आज आप ने अपने घर के बरआमदों से (बिला ज़रूरत) बाहर नीज़ किसी और के दरवाज़ों वग़ैरा से उन के **घरों के अन्दर झांकने** से बचने की कोशिश की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

तीसरा द-रजा 12 म-दनी इन्आ़मात

(36) **क़र्ज़दार** होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तिताअ़त) क़र्ज़ ख़्वाह की इजाज़त के बिग़ैर आप ने क़र्ज़ की अदाएगी में कहीं ताख़ीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आ़रियतन (या'नी आ़रिज़ी तौ़र पर) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर **मुक़र्ररा** मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(37) आज आप ने किसी मुसल्मान के उ़यूब पर मुत्तलअ़ हो जाने पर उस की **पर्दा पोशी** फ़रमाई या (बिला मस्लह़ते शर-ई) उस का ऐ़ब ज़ाहिर कर दिया ? नीज़ किसी की राज़ की बात (बिग़ैर उस की इजाज़त) दूसरे को बता कर **ख़ियानत** तो नहीं की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(38) क्या आज आप को **झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर** और **वा'दा ख़िलाफ़ी** से बचने में काम्याबी ह़ासिल हुई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(39) क्या आज आप ने नमाज़ और दुआ़ के दौरान **ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़** (या'नी बदन में आ़जिज़ी और दिल में गिड़गिड़ाने की कैफ़िय्यत) पैदा करने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ दुआ़ में हाथों की हथेलियां आस्मान की त़रफ़ रखीं या नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(40) आज आप ने **आ़जिज़ी** के ऐसे अल्फ़ाज़ जिन की ताईद दिल न करे बोल कर कहीं **निफ़ाक़** और **रियाकारी** का इरतिकाब तो नहीं किया ? म-सलन इस त़रह़ कहना कि मैं ह़क़ीर हूं, बहुत बुरी हूं वग़ैरा जब कि दिल में ख़ुद को बहुत अच्छी और नेक समझती हों ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(41) क्या आज आप ने **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना** लगाते हुए फ़ुज़ूल गोई से बचने की आ़दत डालने के लिये कुछ न कुछ **इशारे से** और कम अज़ कम **12 बार लिख कर** बात की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(42) क्या आज आप ने (घर में और बाहर भी) **मज़ाक़ मस्ख़री, त़न्ज़ बाज़ी, दिल आज़ारी** और **क़ह्क़हा** लगाने (या'नी खिलखिला कर हंसने) से बचने में काम्याबी ह़ासिल की ? (बिला इजाज़ते शर-ई किसी मुसल्मान का दिल दुखाना कबीरा गुनाह है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(43) क्या आज आप ने ज़रूरी गुफ़्त-गू भी **कम से कम अल्फ़ाज़** में निमटाने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में फ़ौरन नादिम हो कर ज़िक्रो अज़्कार किया या कम अज़ कम एक बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ लिया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(44) क्या आज आप ने शर-ई इजाज़त की सूरत में घर से बाहर निकलते वक़्त **म-दनी बुरक़अ़, दस्ताने, जुराबें** पहनीं ? (म-दनी बुरक़अ़, दस्ताने, जुराबें शर-ई पर्दे का बेहतरीन ज़रीआ़ हैं । दस्तानों और जुराबों से खाल की रंगत नहीं झलक्नी चाहिये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(45) आज आप ने ऐसा चुस्त या बारीक लिबास (जिस से जिस्म की हैअत ज़ाहिर हो या रंगत झलके) पहन कर مَعَاذَاللّٰه कहीं **बे पर्दगी** तो नहीं की ? नीज़ गुनाहों भरा फ़ेशन करने म-सलन मर्दों की त़रह़ बाल कटवाने, अब्रू बनवाने, चालीस दिन से ज़ाइद नाख़ुन बढ़ाने वग़ैरा से बचने की कोशिश फ़रमाई ? (नेल पॉलिश लगाना वुज़ू और ग़ुस्ल में रुकावट है और अफ़्शां या'नी चमकदार पाउडर से भी बचें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(46) आप ने (बिला मस्लह़ते शर-ई) किसी एक या चन्द से दोस्ती गांठ रखी है या सब के साथ **यक्सां तअ़ल्लुक़ात** रखे हैं ? (मुशा-हदा येही है कि फ़ी ज़माना उ़मूमन ज़ाती दोस्तियां और ग्रूप बन्दियां तन्ज़ीमी कामों की तरक़्क़ी में रुकावट बनती हैं हां इन्दज़्ज़रूरत कहीं आने जाने में क़ाबिले ए'तिमाद और नेक इस्लामी बहन का साथ हो तो कोई ह़रज नहीं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(47) क्या आज आप ने तन्हा या **केसिट इज्तिमाअ़** में कम अज़ कम एक सुन्नतों भरा **बयान** या **म-दनी मुज़ा-करे** की केसिट बैठ कर तवज्जोह के साथ सुनी ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

कुफ़्ले मदीना कारकर्दगी

म-दनी माह व साल.....

तारीख़	लिख कर गुफ़्त-गू	इशारे से गुफ़्त-गू	निगाहें गाड़े बिग़ैर गुफ़्त-गू	कुफ़्ले मदीना ऐ़नक का इस्ति'माल
	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कमो बेश 12 मिनट
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				
11				
12				
13				
14				
15				

63 म-दनी इन्आ़मात

तारीख़	लिख कर गुफ़्त-गू	इशारे से गुफ़्त-गू	निगाहें गाड़े बिग़ैर गुफ़्त-गू	कुफ़्ले मदीना ऐ़नक का इस्ति'माल
	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कमो बेश 12 मिनट
16				
17				
18				
19				
20				
21				
22				
23				
24				
25				
26				
27				
28				
29				
30				

हफ़्तावार 3 म-दनी इन्आ़मात

(48) क्या आप ने इस हफ़्ते सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में **आग़ाज़** ही से शरीक हो कर (जितना बैठ सकीं उतनी देर) दो ज़ानू बैठ कर अक्सर निगाहें नीची किये **बयान, ज़िक्रो दुआ़** और **सलातो सलाम** में शिर्कत फ़रमाई ?

(49) क्या आप ने इस हफ़्ते इज्तिमाअ़ के फ़ौरन बा'द खुद आगे बढ़ कर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए कम अज़ कम एक नई इस्लामी बहन से **मुलाक़ात** का शरफ़ ह़ासिल कर के उन का नाम, पता और फ़ोन नम्बर ह़ासिल किया ? नीज़ दौराने गुफ़्त-गू उन से और इस के इलावा दीगर इस्लामी बहनों और शोहर व महारिम से बात करते हुए अक्सर मुस्कुराने की सुन्नत अदा की ? सुसर के मुआ़-मले में एह़तियात़ रहे तो अच्छा है।

(50) क्या आप ने इस हफ़्ते पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी दिन) का **रोज़ा** रखा ? नीज़ हफ़्ते में कम अज़ कम एक दिन खाने में **जव शरीफ़ की रोटी** तनावुल फ़रमाई ?

माहाना 5 म-दनी इन्आ़मात

(51) क्या आप ने इस म-दनी माह की पहली **बुध** को साबिक़ा म-दनी माह का **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के अपनी ज़ैली ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाया ?

(52) क्या इस माह आप की **इन्फ़िरादी कोशिश** से कम अज़ कम एक इस्लामी बहन ने **फ़िक्रे मदीना** कर के **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के **जम्अ़** करवाया ?

(53) क्या इस माह हैज़ व निफ़ास के अय्याम में जितनी देर नमाज़ में सर्फ़ होती है उतनी देर **ज़िक्रो दुरूद** या **दीनी मुता़-लआ़** (बिग़ैर आयत व तरजमा छूए) करने में मस्रूफ़ रहीं ?

(54) क्या आप ने **छ[6] कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुज्मल, तक्बीरे तश्रीक़** और **तल्बिया** (या'नी **लब्बैक**) येह सब तरजमे के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) येह सब पढ़ लिये ?

(55) क्या आप ने **अज़ान** और इस के बा'द की **दुआ़**, कुरआन शरीफ़ की कम अज़ कम आख़िरी **दस सूरतें, दुआ़ए क़ुनूत, अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम** और कोई एक **दुआ़ए मासूरा** येह सब हुरूफ़ की मख़ारिज से अदाएगी के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं ? नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) येह सब पढ़ लिये हैं ?

सालाना 8 म-दनी इन्आ़मात

(56) क्या आप ने इस साल कम अज़् कम एक मर्तबा **सगे मदीना** عُفِیَ عَنۡہُ के तमाम **रसाइल** (जो आप को मा'लूम हैं) पढ़ या सुन लिये हैं ?

(57) क्या आप ने इस साल कम अज़् कम एक मर्तबा **सगे मदीना** عُفِیَ عَنۡہُ के मुरत्तब कर्दा **म-दनी फूलों** के तमाम पेम्फ़लेट (जो आप को मा'लूम हैं) पढ़ या सुन लिये हैं ?

(58) क्या आप ने हुरूफ़ की मख़ारिज से अदाएगी के साथ कम अज़् कम एक बार **क़ुरआने पाक** नाज़िरा ख़त्म कर लिया है ? और इसे इस साल दोहरा लिया ?

(59) क्या आप ने आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की किताब **तम्हीदुल ईमान मअ़ ह़ाशिया ईमान की पहचान** नीज़ मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताबें **कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब** और **चन्दे के बारे में सुवाल जवाब** पढ़ या सुन ली हैं ?

(60) क्या आप ने **बहारे शरीअ़त** या **इस्लामी बहनों की नमाज़** से पढ़ या सुन कर अपने **वुज़ू, ग़ुस्ल** और **नमाज़ दुरुस्त** कर के किसी मुबल्लिग़ा या मह़रम मुबल्लिग़ को सुना दिये हैं ?

(61) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक बार सय्यिदुना **इमाम ग़ज़ाली** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللهِ الۡوَالِى की आख़िरी तस्नीफ़ **मिन्हाजुल आ़बिदीन** से तौबा, इख़्लास, तक़्वा, ख़ौफ़ो रजा, उ़ज्ब व रिया, आंख, कान, ज़बान, दिल और पेट की हि़फ़ाज़त का बयान पढ़ या सुन लिया ?

(62) क्या आप ने इस साल बारी के दिनों में रह जाने वाले **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े बा'द में **क़ज़ा** कर लिये ? (बारी के दिनों में नमाज़ मुआ़फ़ है मगर रोज़े क़ज़ा करने होते हैं)

(63) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक मर्तबा **बहारे शरीअ़त** हि़स्सा **9** से मुरतद का बयान, हि़स्सा **2** से नजासतों का बयान और कपड़े पाक करने का त़रीक़ा, हि़स्सा **16** से ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान, वालिदैन के हुक़ूक़ का बयान, (अगर शादी शुदा हैं तो) हि़स्सा **7** से मुह़र्रमात का बयान और हुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन हि़स्सा **8** से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का बयान, ज़िहार का बयान और त़लाक़े किनाया का बयान पढ़ या सुन लिया ?

रिज़ाए रब्बुल अनाम के काम

अ़त्तार की अजमेरी बेटी : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : जो ज़ैल में दिये गए **10 म-दनी इन्आ़मात** की पाबन्दी करे वोह मेरी "**अजमेरी बेटी**" है।

मदीना 1 : (दीगर फ़राइज़ व वाजिबात पर अ़मल के साथ साथ) रोज़ाना **पांचों नमाज़ें** (मुस्तह़ब वक़्त में) ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ मस्जिदे बैत में अदा करे।

मदीना 2 : रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम **2 दर्स** (मद्रसा, घर, वग़ैरा) जहां सहूलत हो दे या सुने। (दो में से घर का एक दर्स ज़रूरी है)

मदीना 3 : रोज़ाना **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ा क्लास) में पढ़ने, पढ़ाने की तरकीब करे।

मदीना 4 : रोज़ाना कम अज़ कम दो इस्लामी बहनों को **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ म-दनी इन्आ़मात, बालिग़ा क्लास, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़, नेकी की दा'वत व दीगर म-दनी कामों की तरग़ीब दिलाए।

मदीना 5 : दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों (म-सलन इन्फ़िरादी कोशिश, दर्सो बयान, म-दनी मश्वरा वग़ैरा) में रोज़ाना कम अज़ कम **दो घन्टे** सर्फ़ करे।

मदीना 6 : रोज़ाना **नमाज़े तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त** और **अव्वाबीन** अदा करे।

मदीना 7 : **हफ़्तावर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत की तरकीब करे।

मदीना 8 : रोज़ाना कम अज़् कम एक बयान या **म-दनी मुज़ा-करे** की केसिट सुने।

मदीना 9 : रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के दौरान म-दनी इन्आ़मात का **रिसाला पुर कर के** हर म-दनी माह की पहली बुध शरीफ़ अपनी ज़ैली ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा दे।

मदीना 10 : बारी के दिनों में रह जाने वाले रोज़ों को रखने की तरकीब करे।

अ़त्तार की बग़दादी बेटी : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : जो मज़्कूरा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल के साथ **63** में से कम अज़् कम **52** और जामिआ़तुल मदीना और मद्र-सतुल मदीना की त़ालिबात **83** में से कम अज़् कम **72** म-दनी इन्आ़मात की आ़मिला हो वोह मेरी "**बग़दादी बेटी**" है।

अ़त्तार की मक्की बेटी : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इर्शाद है : जो मुन्दरिजए बाला मा'मूलात बजा ला कर मेरी अजमेरी और बग़दादी बेटी बनने के साथ

बेटी बनने के साथ साथ जे़ल में दिये हुए 5 म-दनी काम पाबन्दी से करे वोह मेरी "**मक्की बेटी**" है।

मदीना 1 : रोज़ाना कम अज़ कम **12** बार लिख कर गुफ़्त-गू।

मदीना 2 : रोज़ाना कम अज़ कम **12** बार इशारे से गुफ़्त-गू।

मदीना 3 : रोज़ाना कम अज़ कम **12** मिनट कुफ़्ले मदीना के ऐ़नक का इस्ति'माल।

मदीना 4 : (ज़रूरी गुफ़्त-गू की नौबत आती हो तो) रोज़ाना कम अज़ कम **12** बार सामने वाले के चेहरे पर नज़रें गाड़े बिग़ैर गुफ़्त-गू।

मदीना 5 : हफ़्ते में कम अज़ कम एक रिसाला पढ़े।

(जो रोज़ाना कम अज़ कम एक रिसाला पढ़ने का मा'मूल बनाए उस से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बहुत ख़ुश होते हैं)

अ़त्तार की म-दनी बेटी : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का फ़रमाने शफ़्क़त निशान है कि जो मुन्दरिजए बाला तमाम मा'मूलात के साथ साथ मुकम्मल **63** और मज़्कूरा त़ालिबा मुकम्मल **83** म-दनी इन्आ़मात की आ़मिला हो वोह मेरी "**म-दनी बेटी**" है।

जज़्बाते अ़त्तार : आह ! आह ! आह ! दिल ख़ौफ़ज़दा है मैं नहीं

जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मेरे बारे में ख़ुफ़्या तदबीर क्या है ! अलबत्ता मेरे दिल के जज़्बात येह हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में मुझ पर अगर ख़ास करम हो गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी हर **अजमेरी, बग़्दादी, मक्की** और **म-दनी बेटी** को जन्नतुल फ़िरदौस में साथ लेता जाऊंगा।

अ़त्तार किस से बेज़ार : जो इस्लामी बहन दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा, इन्तिज़ामी काबीनात व मजालिस वग़ैरा की बिला इजाज़ते शर-ई लोगों के सामने मुख़ा-लफ़त करे वोह न मेरी अजमेरी बेटी, न बग़्दादी, न मक्की न म-दनी बेटी बल्कि **क़ल्बे अ़त्तार उस से बेज़ार है।**

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो रोज़ाना येह मज़्कूरा म-दनी काम कर लिया करे उस अ़त्तार की अजमेरी और बग़्दादी नीज़ अ़त्तार की मक्की व म-दनी बेटी को मअ़ अ़त्तार जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी महबूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना ले।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मर्कज़ी मजलिसे शूरा

"या रब्बे करीम ! हमें मुत्तक़ी बना" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से घर में "म-दनी माहौल" बनाने के 19 म-दनी फूल

(1) घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये। **(2)** वालिदा या वालिद साहिब को आते देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाइये। **(3)** दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहिब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाउं चूमा करें। **(4)** वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये। **(5)** इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हो फ़ौरन कर डालिये। **(6)** सन्जी-दगी अपनाइये। घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्ख़री करने, बात बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बह़सें करते रहने की अगर आप की आ़दतें हों तो अपना रवय्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये। **(7)** घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी। **(8)** मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी "आप" कह कर ही मुख़ातिब हों। **(9)** अपने मह़ल्ले की मस्जिद में इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये। काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) **मुयस्सर** आए और फिर कामकाज में भी सुस्ती न हो। **(10)** घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्सिला हो और आप अगर सर-परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के

बजाए सब को नरमी के साथ **मक-त-बतुल मदीना** से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ऑडियो/वीडियो केसिटें सुनाइये। **म-दनी चेनल** दिखाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ "म-दनी नताइज" बरआमद होंगे। **(11)** घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, **सब्र, सब्र** और **सब्र** कीजिये। अगर आप ज़बान चलाएंगे तो "म-दनी माह़ोल" बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैत़ान लोगों को ज़िद्दी बना देता है। **(12)** म-दनी माह़ोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ येह भी है कि घर में रोज़ाना **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये। **(13)** अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ़ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : "**اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ**" या'नी दुआ़ मोमिन का हथियार है।" (المستدرك للحاكم ج٢ص١٦٢حديث١٨٥٥) **(14)** सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए़ शर-ई न हो। **(15) मसाइलुल क़ुरआन सफ़ह़ा** 290 पर है : हर नमाज़ के बा'द येह दुआ़ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में **म-दनी माह़ोल** क़ाइम होगा। (दुआ़ येह है :) "**(اَللّٰهُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا**"[1]
("اَللّٰهُمَّ" आयते क़ुरआनी का ह़िस्सा नहीं)

मदीना

1 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेश्वा बना। (پ١٩،الفرقان٧٤)

(16) ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो 11 या 12 दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयाते मुबा-रका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۙ﴿۲۱﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾ [1] (अव्वल, आख़िर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़) **याद रहे !** बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वज़ीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है ख़ुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अ़मल न किया जाए ख़ास कर बीवी अपने शोहर पर येह अ़मल न करे। **(17)** नीज़ ना फ़रमान औलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आस्मान की त़रफ़ रुख़ कर के **"یَاشَهِیْدُ"** 21 बार पढ़िये। (अव्वल व आख़िर, एक बार दुरूद शरीफ़) **(18) म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल की आ़दत बनाइये, और घर के जिन अफ़राद के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में और आप अगर बाप हैं तो औलाद में नरमी और हिक्मते अ़-मली के साथ **म-दनी इन्आ़मात** का निफ़ाज़ कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से घर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा। **(19)** (इस्लामी भाई) पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ़ करें। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से भी घरों में **म-दनी माह़ोल** बनने की "म-दनी बहारें" सुनने को मिलती हैं।

مدینہ

1 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला क़ुरआन है लौह़े महफ़ूज़ में। (پ۳۰، البروج:۲۱،۲۲)

कारकर्दगी बराए रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के काम

(1) इस माह के अक्सर दिनों में **मज़्कूरा म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की कोशिश रही ? ☐

(2) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़् कम **12** मर्तबा **लिख कर** गुफ़्त-गू फ़रमाई ? ☐

(3) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़् कम **12** मर्तबा **इशारे से** से गुफ़्त-गू फ़रमाई ? ☐

(4) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़् कम **12** मर्तबा चेहरे पर **निगाहें गाड़े बिग़ैर** गुफ़्त-गू की कोशिश फ़रमाई । ☐

(5) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़् कम **12** मिनट **कुफ़्ले मदीना का ऐनक** इस्ति'माल फ़रमाया ? ☐

(6) इस माह आप ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कितने रसाइल का मुता़-लआ़ फ़रमाया ?

पहला हफ़्ता ☐ तीसरा हफ़्ता ☐ कुल ता'दाद ☐

दूसरा हफ़्ता ☐ चौथा हफ़्ता ☐

(7) इस माह **63 म-दनी इन्आ़मात** में से कितने पर अ़मल की कोशिश रही ? ☐

(8) इस माह कितने दिन फ़िक्रे मदीना की सआ़दत ह़ासिल की ? ☐

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस माह **अ़त्तार की अजमेरी बेटी** ☐ **अ़त्तार की बग़्दादी बेटी** ☐ **अ़त्तार की मक्की बेटी** ☐ **अ़त्तार की म-दनी बेटी** ☐ बनने की सआ़दत ह़ासिल हुई ।

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आयन्दा माह कम अज़् कम ☐ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश करूंगी ।

अ़मल करने का आसान त़रीक़ा

रिसाले में हर म–दनी इन्आ़म के नीचे **30** दिनों के ख़ाने दिये गए हैं। रोज़ाना वक़्ते मुक़र्ररा पर **फ़िक्रे मदीना** (या'नी मुह़ा–सबे के दौरान ख़ाने पुर करने का सिल्सिला) कीजिये जिन म–दनी इन्आ़मात पर अ़मल की सआ़दत मिली, नीचे ख़ाने में (✓) का निशान वरना (O) बना दीजिये إن شاء الله عزوجل ब तदरीज अ़मल में इज़ाफ़े के साथ साथ दिल में गुनाहों से नफ़रत पाएंगे।

ह़दीसे पाक में है : (आख़िरत के मुआ़–मले में) घड़ी भर ग़ौरो फ़िक्र करना **60** साल की इ़बादत से बेहतर है।

(الجامع الصغير للسيوطي ، الحديث 5897 ص 365 دار الكتب العلمية بيروت)

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह عزوجل **!** जो हर माह तेरी रिज़ा के लिये म–दनी इन्आ़मात पर अ़मल कर के रोज़ाना इस रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर कर के अपने ज़ैली मुशा–वरत के निगरान को जम्अ़ करवाए तू उस के अ़मल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा कर उस को अपना मक़्बूल बन्दा बना ले।

म–दनी माह.......................... 14 सि.हि.

नाम मअ़ वल्दियत....................................उ़म्र तक़्रीबन.........

मुकम्मल पता..

ज़ैली ह़ल्क़ा...................... ह़ल्क़ा.................. अ़लाक़ा/शहर...............

आप ने **फ़िक्रे मदीना** (या'नी मुह़ा–सबे के दौरान ख़ाना पुरी करने) के लिये कौन सा **वक़्त** मुक़र्रर फ़रमाया है ?..............................

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

मक-त-बतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

Mo.091 93271 68200

E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net